REVIEW OF RESEARCH
IMPACT FACTOR : 5.7631(UIF) UGC APPROVED JOURNAL NO. 48514 ISSN: 2249-894X
VOLUME - 8 | ISSUE - 3 | DECEMBER - 2018

महिलाओं के सामाजिक सशक्तिकरण में शिक्षा की भूमिका : दशा और दिशा

डॉ. जय किरन
विभागाध्यक्ष/ऐसोसियट प्रोफेसर (समाजशास्त्र)
राजकीय पी.जी. कॉलेज, छर्रा, अलीगढ़ उ.प्र.

प्रास्ताविक :–

प्राचीन काल से उत्तर वैदिक काल तक हर क्षेत्र में पारी के त्याग, बलिदान, शौर्य व महत्व का सचित्र वर्णन मिलता है। नारी का त्याग व बलिदान, भारतीय संस्कृति की अमूल्य निधि है। समाज में जिस प्रकार पुरूष को महत्वपूर्ण माना जाता है वैसे ही वर्तमान संदर्भ में नारी का स्थान भी अद्वितीय है। समाज में महिलाओं को उच्च ओहदा एवं उचित स्थान दिलाने के लिए उन्हे संगठित रूप में आज प्रस्तुत किया जाता बहुत आवश्यक है। इसी को ध्यान मे रखते हुए सन् 2001 को महिला सशक्तिकरण वर्ष घोषित किया गया।

आज हर क्षेत्र में नारी ने अपनी उपस्थिति दर्ज की है जो, गौरव की बात है। अब पहले जैसा नहीं रहा कि वह केवल पुरूषों पर ही निर्भर रहती है। एक जमाना था जब स्त्री कभी पिता, पति, भाई या फिर बेटे पर निर्भर रहती थी, उनके अनुसार ही अपना जीवन जीना पड़ता था, लेकिन धीरे–धीरे वक्त बदला हालात बदले और नारी भी आगे बढ़ती चली गया। आज वह अपने बलबूते पर अपना जीवकोपार्जन कर सकती है।

नेहरू जी ने कहा है कि ''एक बालक को शिक्षित करने का मलतब है कि एक व्यक्ति को शिक्षित करना जबकि एक बालिका को शिक्षित करने का मलतब सम्पूर्ण परिवार को शिक्षित करना है।'' दरअसल एक बालिका की समुचित शिक्षा–दीक्षा तो एक दीपक के जलाने के समान है। यह दीपक प्रकाश तो प्रदान करता है, साथ ही इसकी लौ से अनवरत नये–नये दीपक भी जलते है जो इस प्रकाश को कोई गुना बढ़ाते चले जाते है।

वास्तव में महिलाएं ही पूरे परिवार को शिक्षित करके राष्ट्र को योग्य व सशक्त बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। पिछली लगाभग एक शताब्दी से स्त्री मुक्ति की सशक्त उपस्थिति के बावजूद इस शताब्दी के शुरूआत में लाखों स्त्रियॉ अपने बुनियादी अधिकारों से वंचित है। इधर भूमंडलीकरण, निजीकरण और उदारीकरण की नीतियों से स्त्रियों के रोजगार की सुरक्षा उनके यूनियन बनाने जैसे सामुदायिक अधिकारों और सामाजिक सुरक्षा पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ा है। आज स्त्रियों भी अपने अधिकारों के लिए संघर्ष कर रही है, वे गरीबी भेदभाव के खिलाफ रही है और नागरिक अधिकारों के लिए संघर्ष कर रही है। सन् 26 जनवरी, 1950 को भारत का संविधान लागू हुआ। संविधान निर्माताओं ने महिलाओं को विकास का अवसर प्रदान करने के लिए संविधान में विभिन्न प्रावधान शामिल किए। परिणामतः आज भारतीय महिलाओं ने साक्षर बनकर साक्षरता अभियान भी चलाया है व पूरे समाज में अपनी न मिटने वाली छवि बना ली है। बहुत से ऐसे व्यवसाय, नौकरी और सेवाएं है, जहॉ पुरूषों के साथ में महिलाओं ने अपनी भागीदारी दिखाई है।

आजादी के आद स्त्रियों को समान नागरिक मानते हुए पुरूषों के समान ही व्यस्क मताधिकार प्राप्त हुआ। स्त्रियों में शिक्षा बढ़ी, सरकार द्वारा उठाये गये, महिला समाख्या कार्यक्रम, ग्रामीण क्षेत्र की महिलाओं व उनको उनका अधिकार दिलाने का ठोस कार्यक्रम है। इसे 10 राज्यों के 53 जिलों के 9000 से अधिक गॉवों में क्रियान्वित किया जा रहा है। राधाकृष्णन कमीशन (1948–49) ने स्त्री शिक्षा पर बल देते हुए कहा है कि ''शिक्षित स्त्रियों के बिना शिक्षित व्यक्ति नहीं हो सकते, प्रथम पंचवर्षीय योजना एवं द्वितीय पंचवर्षीय योजना में भी बालिका एवं स्त्री शिक्षा पर विशेष जोर दिया गया। इसके अलावा महिला शिक्षा परिषद 1959, हंसा मेहता समिति 1962, कोठारी कमीशन 1964–66, राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986, आचार्य राममूर्ति समिति 1990 आदि के गठन द्वारा महिला शिक्षा के विकास के लिए प्रयास किया गया। 2010 में किशोर बालिकाओं का आर्थिक

आत्मनिर्भर बनाने के लिए 'सबला' योजना की मंजूरी दी गयी है। जो प्रतिवर्ष 200 जिलों में 13–19 वर्ष की बालिकाओं के विकास की संकल्पना है।

प्रयासों के परिणाम एवं सशक्त महिलाएं–

भारतीय महिलाओं ने आज अपनी सफलता के बल पर समाज को अपनी सोच बदलने के लिए विवश कर दिया। आज कोई महिला दक्षिणी ध्रुव पर स्कीईग करते हुए पहुँच रही है, तो कोई राजनीति के उच्च पदों पर आसीन है। भारत की प्रथम महिला राष्ट्रपति प्रतिभा देवी सिंह पाटिल बनी एंव अनेकों ऐसे नाम लिए जा सकते है, जिन्होने शिक्षा, राजनीति में बहुत नाम कमाया है जैसे मा0 उत्तर प्रदेश की पूर्व मुख्यमंत्री सुश्री मायावती, श्रीमती इन्दिरा नुई, भारत की प्रथम महिला प्रधानमंत्री इंदिरा गॉधी की प्रतिबिम्ब स्वरूप सोनिया गॉधी का आज राजनीति में कॉग्रेस दल के अध्यक्ष पद पर आसीन होना महिला सशक्तिकरण का ज्वलंत उदाहरण है। उसके अलावा नौसेना के 56 वर्षो के इतिहास में ऐसा पहली बार हुआ जब महिला विमान चालकों के पद पर महिला अधिकारियों को मैरीटाइम पैट्रोल एयरकाफ्ट के बेड़े में पर्यवेक्षक के तौर पर शामिल किया गया। ये उन लकडियों की अलग मिसाल बनी, जिनका सपना नौसेना में शामिल होना रहता है। एक उदाहरण उत्तर प्रदेश में अमरोहा की खुशबू मिर्जा का नाम अब देशों के बड़े सेटैलाइट मिशन से जुड़ चुका है। इसी क्रम में रीना कौशल दक्षिणी ध्रुव पर स्कीइंग करते हुए पहुँचने वाली प्रथम भारती महिला बनी। शिक्षा एवं हिम्मत के कारण ही हमारे देश की प्रथम महिला आई0पी0एस0 पद पर किरण बेदी जी का नाम अग्रणी है। अपनी सूझबूझ के कारण समाज में न्यायमूर्ति के समान, समाज में इनका स्थान उच्च है। कल्पना चावला भी महिलाओं के लिए एक महत्वपूर्ण उदाहरण है। इस तरह हम कह सकते है कि शिक्षा द्वारा समाज में महिलाओं ने अपने को सशक्त कर लिया है। और वह पुरूषों से कहीं भी पीछे नहीं है।

प्राचीन भारतीय समाज में स्त्री का दर्जा बहुत ऊँचा था। ऐसी मान्यताओं के यथार्य की कसौटी पर कसने की आवश्यकता है। यदि वह स्वीकार कर ले कि प्राचीन युग में स्त्री की स्थिति बहुत अच्छी भी तथा उनका स्थान ऊँचा था। भारतीय व्यवस्था के इतिहास में स्त्रियों की स्थिति एक लम्बें समय से विवाद का विषय रही है। स्त्रियों की स्थिति से सम्बन्धित विवाद का कारण यह नहीं है कि हम जैविकीय अथवा मानसिक रूप से उन्हे दोषपूर्ण मानते है बल्कि इसका प्रमुख कारण हमारी पवित्रता सम्बन्धी संकीर्ण विचार धारा ही है। पश्चिमी विद्वानों ने यहॉ तक मान लिया है कि नारी के कुछ ऐसे जन्मजात दोष है जिनके कारण वह पुरूषों के साथ समानता का दावा नहीं कर सकती स्त्रियों में जन्म से ही आनंगति और परस्पर विरोध का दोष होता है। जबकि हमारी मौलिक सामाजिक व्यवस्था में स्त्रियों को सम्पन्ति, ज्ञान और शक्ति का प्रतीक माना गया है। जिसकी अभिव्यक्ति के रूप में लक्ष्मी, सरस्वती और दुर्गा की पूजा की जाती रही है, स्त्री को पुरूष की 'अर्द्धागिंनी' के रूप में स्थान दिया गया है, जिसके बिना किसी कर्त्तव्य की पूर्ति नहीं की जा सकती। यह हमारा दुर्भाग्य है कि वैदिक व्यवस्थाऍ रूढियों के रूप में परिवर्तित होने लगी और फलस्वरूप स्त्रियों में लज्जा, ममतर और स्नेह के गुणों की उनकी दुर्बलता समझकर पुरूष ने उनका मनमाना शोषण करना शुरू कर दिया, ऐसी प्रवृत्तियों की स्मृति कारों और धर्मशास्त्र कारों का आर्शीवाद प्राप्त होने के कारण स्त्री धीरे–धीरे परतन्त्र निसहाय और निर्बल बन गयी। पुरूष ने शक्ति के लोभ में स्त्री के पारिवारिक अधिकार तक छीन लिए। इन परिस्थितियों का परिणाम यह हुआ कि महत्व में हिन्दू समाज में स्त्रियों की स्थिति एक पानी से अच्छा नहीं रह गयी। समय व समाज परिवर्तनशील है और हमारे समाज के एक बडे भाग ने स्त्रियों की स्थिति में सुधार करने के व्यापक प्रयत्न किये। इसके फलस्वरूप भारतीय समाज में आज स्त्रियों को पुनः सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक क्षेत्रों में नवीन अधिकार प्राप्त हो रहे है। अनेक क्षेत्र में स्त्रियो ने पुरूषों पर उपनी श्रेष्ठता स्थापित कर यह सिद्ध कर दिया है कि जन्मजात दृष्टि से उनमें कोई क्षमता पुरूषों से कम नहीं है।

भारतीय स्त्री की चर्चा करते समय यह न भूलना चाहिए कि स्त्री की स्थिति में भूलभूत परिवर्तन 19वीं सदी के बाद प्रारम्भ हुआ, वाह्य दृष्टि से इस परिवर्तन के लिए अंग्रेजी राज्य को उत्तरदायी माना जा सकता है। इस नई राजसत्ता ने कौन सी ऐसी शक्तियों पैदा की जिन्होने सदियों से जीम हुई संस्थाओं की नीव हिला दी?

आधुनिक युग में नारी केवल पत्नी, माता आदि सम्बन्धों के द्वारा ही अपना परिचय नहीं देती, वह अपने आपको राष्ट्र या समाज के उत्तरदायी नागरिक के रूप में उपस्थित करती है। स्वतन्त्रता से पूर्व हमारी शिक्षा

का जो लक्ष्य था वह स्वतन्त्र देश के अनुरूप न था, न हो सकता था। परन्तु वर्तमान सदी के पॉचवे दशक से अब तक उसमे ममत्व परिवर्तन न होना देश के सर्वागीन विकास के लिए धातक ही सिद्ध हुआ है। आधुनिक युग में सभी देशों की प्रबृद्ध नारियों ने जो विकास किया है उसमें भारतीय नारी का भी अंशदान है। जैसे भिन्न–भिन्न पर्वतों से निकलने वाली नदियॉ भी अपने–अपने मार्ग से बहती हुई एक ही समुद्ध में निकलने वाली नदियॉ भी अपने–अपने मार्ग से बहती हुई एक ही समुद्र में मिलती है वैसे ही विश्व के छोटे–बड़े देशों की नारियों अपने–अपने देशों की सांस्कृतिक विशेषताओं के साथ एक विकास का लक्ष्य रखती है।

स्त्री के सम्बन्ध में समाज की मूल धारणा यही है कि वह शारीरिक बल की दृष्टि से पुरूष से दुर्बल है। प्रत्येक क्षेत्र में पुरूष की समानता करके उसने प्रमाणित कर दिया है कि उक्त धारणा के मूल में कोई तथ्य नहीं था अन्तरिक्ष में यात्रा करके, वायुयानों का अपहरण करके, सैनिकों के समान गुरिल्ला युद्ध में कठोर कर्म करके उसने अपने शक्ति से अग्नि परीक्षा दी और सफल कूरकर्य उसके विकास में बालक है क्योंकि वह मातुजाति है सृजन उसका स्वभाव है किन्तु जब नवीन युग में स्नेह सहानुभमि से बनी उसकी गृहस्थी ही जल गई तब उसकी प्रतिशोध निर्बन्ध हो गया। पर्वतारोहण का कार्य अब तक केवल पुरूषों मे विशेष साहसियों को ही आकर्षित करता था। आज हिम से के पर्वताशिखरों के अभियान कोमल कानत शरीर वाली युवतियों का मानों मनोरंजन हो गया है। प्रतिवर्ष पर्वतारोहण मे स्त्रियों के चरण–चिनहों से पर्वत चिन्हित हो जात है। भविष्य में साहसिक कार्यो के अधिकारी केवल पुरूष नहीं आदि की प्रतियोगिताओं में स्त्रियों भाग ले रही है। भारत में इंजीनियर, नौसेना अधिकारी जैसे पदों पर स्त्रियों कार्य कर रहर है। विभान, चालक, पेराशूट या छतरी धारी सैनिकों जैसे पदों पर स्त्रियॉ है और यान्त्रकीय विभाग में भी है इन विशेष कार्यो के अतिरिक्त नागरिक सेवा क्षेत्र में भी स्त्रियों की संख्या वृद्धि पर है। और दृष्टिर, कानून के क्षेत्र में महिला वकीलों की वृद्धि उनके प्रबृद्ध होने का लक्षण है। आधुनिक युग के अनुसार अन्य कर्मक्षेत्रों के द्वारा उन्मुक्त हुए है। एअर होस्टैस, रिसेरसनिस्ट, सेतसगर्ल, फेशन मॉडल आदि अनेक नये काम तथा कर्तव्य वाले क्षेत्रों में उसने पैर रखा है। इसके अतिरिक्त उसके समक्ष देश विदेश की नारियों इतिहास की एक विधि और विस्तृत चित्रशाला होगी, जिसमें पूर्वजों के संघर्ष, जय–पराजय आदि से उसका परिचय आत्मीय और स्वाभाविक होगा।

वर्तमान युग में की भारतीय नारी की कई मोर्चो पर संघर्ष करना पड़ा और आगामी दशक की स्त्री स्वतन्त्रता देश की नागरिक होने के कारण अपने स्वत्व के लिए समाज से याचना करने की आवश्यकता नहीं समझेगी। युगों से दलित–पीडित रहने के कारण जो हीनता के संस्कार बन गए थे, उन्हे आधुनिक भारतीय नारी ने अपने रक्त और प्रस्वेद से इस प्रकार धो दिया है कि आगामी युग की नारी को उस पर कोई रंग नहीं चढ़ाना पड़ेगा।

सन्दर्भ सूची:–

- Lavaneya, M.M & Jain shashi k (1996) Sociology of Indian women. Published by Research Publication 2/44 Ansari Road, Daryaganj, New Delhi, Tribolia Bazar, jaipur-2
- Desai, Neera (1957) Women in Modern India. Published M.K. vara for Vorasco Publishers Private Ltd. 3 Round Building Bombay.
- Desai, Neera & Krishnaraj Maithreya (1987) Women and Society in India. A Jant Delhi.
- ALKekar, A.S. (1935&1956) the position of women in Hindu Civilization motilal banarisi lal, Varanasi.
- गॉधी जी– वूमैन एण्ड Social दन जस्टिान अहमदाबाद (1942)